एवरशाइन

महक बाल गीत

As per
NEP 2020

अशोक लव

रोज़ जगाने आता सूरज

घोड़ों के रथ पर सवार हो,
सुबह सवेरे आता सूरज।
पर्वत के पीछे से आकर,
हमको रोज़ जगाता सूरज।
सरदी में गीली धरती पर,
अपनी धूप बिछाता सूरज।
लुका-छिपी का खेल खेलकर,
पश्चिम में छिप जाता सूरज।

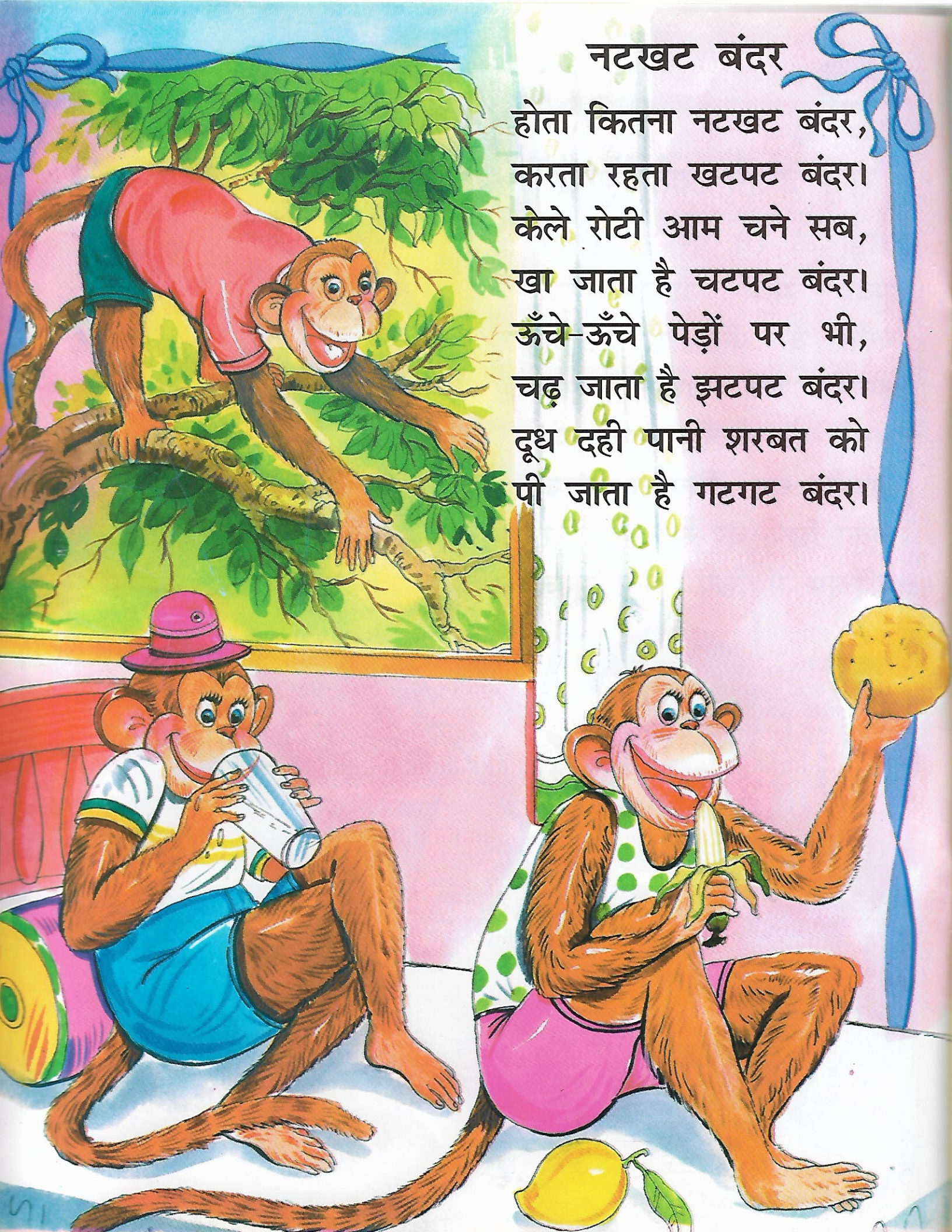

नटखट बंदर

होता कितना नटखट बंदर,
करता रहता खटपट बंदर।
केले रोटी आम चने सब,
खा जाता है चटपट बंदर।
ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर भी,
चढ़ जाता है झटपट बंदर।
दूध दही पानी शरबत को
पी जाता है गटगट बंदर।

रंग रंगीली धूप

लगती छैल छबीली धूप,
यह सर्दी की पीली धूप।
लगता सुबह नहाकर आए,
काँपे गीली-गीली धूप।
सर्दी में तन सहलाती,
गर्मी की भड़कीली धूप।
कई रंग हैं इसके भीतर,
यह है रंग-रंगीली धूप।

बिल्ली चली दिल्ली

काश मुझे मिल जाए हाथी,
सोच रही थी बिल्ली,
और उसी हाथी पर चढ़कर,
झटपट पहुँचूँ दिल्ली,
तभी सामने से आता,
देखा जो कुत्ता किट्टी,
भागी बिल्ली जान बचाकर,
भूली सिट्टी पिट्टी।